3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

प्राणी जगत में

धरा गगन जल घर या जंगल, माँ के हाथों में है मंगल

• डॉ. परशुराम शुक्ल

माँ और बच्चे के सम्बन्ध को विश्व में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे मानव के साथ ही जीव–जगत में भी देखा जा सकता है। बाघ के शावक लगभग दो वर्ष तक माँ के पास रहते हैं। इस काल में माँ इन्हें शिकार तथा जीवन के सभी आवश्यक कार्यों का प्रशिक्षण देती है। यही स्थिति सिंहनी की होती है। वह अपने बच्चों को तीन माह तक दूध पिलाती है और इसके बाद शिकार करना सिखाती है। बाघ और सिंह के समान मादा तेंदुआ भी अपने बच्चों को दूध पिलाती है तथा उन्हें शिकार करने का प्रशिक्षण देती है।

मादा गैंडा और उसके बच्चों में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यह बच्चों की आवाज पहचानती है तथा बच्चा इसकी आवाज पहचानता है। दोनों सन्देशों का आदान – प्रदान आवाजों के माध्यम से करते हैं। यह अपने बच्चे को कम से कम दो वर्ष तक साथ रखती है। इसके बाद बच्चा चाहे तो माँ के साथ रह सकता है।

हथिनी अपने बच्चे को चार से छः वर्ष तक दूध पिलाती है तथा अपने साथियों के साथ मिलकर इसकी रक्षा करती है। हाथी का बच्चा पानी सूँड से पीता है, किन्तु माँ का दूध सीधे मुँह से पीता है।

जंगली भैंस अपने नवजात बच्चे के पालन–पोषण के साथ ही उसकी सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखती है। यह अपने बच्चे की रक्षा के लिए बाघ तक से भिड़ जाती है और उसे भगा देती है।

लाल पाण्डा का बच्चा जन्म के बाद पूरी तरह माँ पर निर्भर रहता है। इसके बच्चे के पालन –पोषण में नर की कोई भूमिका नहीं होती। मादा पाण्डा अपने बच्चे को दूध पिलाती है उसकी सुरक्षा करती है तथा तरह–तरह के प्रशिक्षण देती है।

जमीन पर विचरण करने वाले जीवों के समान आकाश में विचरण करने वाले पक्षियों में भी माँ और बच्चों के मध्य अत्यंत आत्मीय और घनिष्ठ सम्बन्ध देखे जा सकते हैं। मोरनी अपने बच्चों की रक्षा करने के साथ ही उन्हें तरह–तरह के प्रशिक्षण भी देती है। यह बच्चों के दूर चले जाने पर उन्हें आवाज देकर अपने पास बुला लेती है। खतरे के समय यह अपने बच्चों को पंखों के मध्य छिपा लेती है। इस समय यदि इसका कोई बच्चा दूर होता है तो यह उसे सावधान कर देती है, जिससे वह गड्ढे अथवा झाड़ी में छिप जाता है।

सारस क्रौंच का बच्चा बड़ा समझदार होता है। यह अपनी माँ की चेतावनी सुन कर दलदल में छिप जाता है। इसके बाद भी यदि कुत्ता, लोमड़ी या इसी प्रकार का हिंसक जीव बच्चे के निकट आ जाता है तो मादा उग्र रूप धारण कर लेती है और अपनी जान खतरे में डाल कर नर के साथ मिल कर शिकारी जीव का सामना करती है।

मोनाल भी अपने अंडों–बच्चों की रक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डाल देती है। यह अपने अण्डे